Chapter-3

तृतीय अध्याय

विभिन्न नाटकों का कथ्य, उनकी विशेषताएँ, कथ्य की दृष्टि से विभिन्न नाटकों का वैशिष्ट्य और उनकी आलोचना ।

तृतीय अध्याय

कथ्य की दृष्टि से नाटकों का परिचय

नारी नाट्य लेखिकाओं ने विविधरंगी नाटकों का सृजन किया है। प्रस्तुत अध्याय में हमें यह देखना है कि उनके बहुआयामी नाटकों का कथ्य कैसा है?

नाटक की "आत्मा" वस्तु है जो कथानक के ढॉचे में रहती है इसका सृजन नाटककार की साधना का सबसे कठिन और मार्मिक बिन्दु होता है। वस्तु —सृजन के मूल में युग , आवश्यकता, युग—आस्वाद और दर्शक—समाज होता है।—1 नाट्यालेख शुरु करनें से पहले नाटककार आदि ,अन्त ,मध्य और विकाश की रुप रेखा को पूरी तरह आत्मसात कर लेता है। 'वस्तु' के भीतर नाटककार की निज की सच्ची आस्था एवं सर्वयुगीन समाज का ऐसा व्यापक वास्तविक स्वरुप होता है जो मानवता के समग्र अंश को किसी —न—किसी रुप में अवश्य स्पर्श करता है और वही अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग है।

"स्वतंत्रता के बाद हिन्दी नाटकों की कथावस्तु में कांतिकारी परिवर्तन हुआ। पौराणिक और ऐतिहासिक कथानक आधुनिक युगबोध की परिधि में बॅधकर रुपायित किये जाने लगे। पौराणिक पात्रों का कोई स्वतंत्र रुप नहीं रह गया। उन चरित्रों में तत्कालीन सामाजिक ,सांस्कृतिक और परिवेश के साथ आज के भोगे हुए क्षणों को भरा जाने लगा। "—2 इस उलटफेर से कुछ नाटकों का मूल पौराणिक रूप भी विकृत हो गया। ऐतिहासिक नाटक तत्कालीन सन्दर्भ के साथ ही आज के घटनाओं से आबद्ध हैं। इस काल में सबसे अधिक सामाजिक नाटकों का सृजन हुआ। जिसमें निर्धनता , बेकारी,स्त्री—स्वातंत्र्य , प्रेम का एक नया रुप , ऋण, नैतिक मूल्यों का विरोध, कथावस्तु का आधार बना है। उच्चमध्यमवर्गीय व निम्नमध्यमवर्गीय परिवारों का चित्रण नाटकों में सफलता के साथ किया गया है । कुछ नाटकों में सेक्स का जीता जागता रूप प्रस्तुत किया गया है—3 नाटकों पर फायड व मार्क्स युग का प्रभाव भी उल्लेखनीय है। फायड के मनोविज्ञान द्वारा पात्रों की मानसिक दशा का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्र उपस्थित होता है।

1— हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंग मंच— डॉ. केदार नाथ सिंह पृ.150

2—स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक — डॉ. रामजन्म शर्मा पृ. 101

3— एक और अजनबी — मृदुला गर्ग

भ्रष्टाचार , नेताओं के चरित्र ,ब्लैक मार्केट ,रिश्वतखोरी, ठेकेदारों की लूट–खसोट को भी नाटको का कथ्य बनाया गया है। कुछ नाटक पति–पत्नी के सम्बन्धों को व्यक्त करनें में भी सक्षम हैं–1 विभिन्न प्रतीकों को लेकर सामाजिक नाटकों की रचना हुई। सामाजिक नाटकों का आधार मूलतः मनुष्य के दैनिक जीवन का चित्रण करना है। साथ ही समाज में व्याप्त बुराइयों का रहस्योद्घाटन प्रभाव व निराकरण इन नाटकों का उद्देश्य है। व्यक्ति स्वातंत्र्य की अपूर्व चेतना ने परम्परागत पारिवारिक मूल्यों के विघटन की स्थिति उत्पन्न कर दी । फलस्वरुप संयुक्त परिवार टूटे। एकल परिवारों का जन्म हुआ। लोग अपने छोटे–छोटे परिवारों में व्यस्त हो गये। व्यक्ति के सामाजिक विस्तार के साथ –साथ उसका पारिवारिक क्षेत्र संकुचित होता जा रहा है। जैसे बृहत् में लघु की प्रतिष्ठा आज का युग–धर्म ही बन गया हो। विज्ञान ने भी तो अणु को त्याग कर परमाणु के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार किया । आज सभी अपने–अपने कार्यो में व्यस्त हैं। किसी को किसी दूसरे से कोई मतलब ही नहीं है। इस युग के अर्थतंत्र में अपनी छोटी सी गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने के लिए पति.–पत्नी दोनों को ही अर्थोपार्जन के उपाय करने पड़ते हैं , और बच्चों को भी पालन –पोषण हेतु अन्य संगठन के आश्रय में छोड़ना पड़ता है । अब संयुक्त परिवारों की कल्पना करना हास्यास्पद है । संयुक्त परिवारों के खंण्डहरों पर आणविक परिवार का जो भवन खड़ा किया गया था वह भी अपनी नीवों से खोखला होता जा रहा है । घर की सुनियोजित रसोई का स्थान होटलों ने छीन लिया है । इस प्रकार सम्प्रति सामाजिक –आर्थिक वास्तविकता के संघात से चहारदीवारी के भीतर

सीमित गृहस्थी के प्रति नारी की कृतज्ञताओं अथवा मूल्यों का परम्परावादी आधार हिल गया है। स्वतंत्रता के अनन्तर यह प्रवृत्ति विशेष बढ़ी है। परिवार के व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों में वैयक्तिक स्वतंत्रता और बुद्धिवाद की ओर प्रवाह आया है। मातृ–पितृ भक्ति आज्ञाकारिता, पति भक्ति, गृहस्थ जीवन की मर्यादा आदि के स्थान पर व्यक्तिगत विचार के प्रति सद्भावना को महत्व दिया जाने लगा है। 2

1– बिना दीवारों के घर – मन्नू भण्डारी

2– हिन्दी समस्या नाटक – डॉ. मान्धाता ओझा पृ0 158

प्रायः नाटकों के कथ्य पारिवारिक ,सामाजिक जीवन मूल्यों की छिन्न–भिन्नता अथवा कशमकश से प्रभावित है । स विघटनवादी प्रवृत्ति ने नारी मन के कोमलतम अंशों को आघात पहुँचाया है, जिसका परिणाम इन नाटकों के कथ्यों में परिलक्षित होता है। 1–, जीवन की उन्मुक्तता ने प्रेम और सम्बन्धों को भी प्रभावित किया है । उन्मुक्त प्रेम,विवाहेतर सम्बन्ध, अविवाहित जीवनयापन , अविवाहित मातृत्व टूटे हुए जीवन मूल्यों के परिणाम है। नारी की आर्थिक स्वावलम्बिता ने नई समस्याओं को उत्पन्न किया। आज की नारी आवश्यकता न होते हुए भी नौकरी करना चाहती है। वह आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहती। वह स्वतंत्र रहना चाहती है। नारी की आर्थिक स्वतंत्रता को पुरूषों ने सहर्ष स्वीकार किया,क्योंकि पुरूषों द्वारा नारी पर किए जाने वाले अत्याचार का मूल कारण आर्थिक परतंत्रता ही है । नारी की आत्मनिर्भरता अब आवश्यकता बन गयी ।।2।। सम सामयिक युद्ध की परिस्थितियों से प्रेरित होकर भी नाटकों की रचना हुई। राजनितिक परिस्थितियों ने भी हिन्दी नाटकें के लिए कथ्य प्रदान किए ।।3।। पौराणिक कथावस्तु को आधार बनाकर गीतिनाट्य भी लिखे गये।।4।।कथावस्तु कैसी होनी चाहिए ? कथानक किसे कहते है इस विषय में विद्वानों के अलग अलग मत हैं। नेमिचन्द्र जैन ने रंगदर्शन में कथानक के विषय में अपना मत दिया है –

"कथानक मूलतः वह घटना विन्यास है,जिसके द्वारा नाटक की भाववस्तु को रूप मिलता है। नाटक का कथानक केवल घटनाओं का समूह मात्र नहीं ,वह घटनाओं का समूह ऐसा कमबद्ध संयोजन है जो किसी सत्य को उद्घाटित करे जिसके माध्यम से कथा से सम्बद्ध पात्रों के अनुभूति के स्तर ,इस प्रकार खुलते जाय कि वे स्वयं तथा दर्शक अपने सच्चे स्वरूप को उपलब्धि करें ।5–" कथावस्तु ही नाटक एवं रंगमंच को अर्थ प्रदान करती है। कथावस्तु नाटक का मूलाधार है जहाँ से नाटक का सारा विकास उसकी सारी परिणतियाँ और सम्भावनाएँ ठोस भूमि पाती है।

1– रेशमी रूमाल – त्रिपुरारी शर्मा

2– भँवर – मृदुला बिहारी

3– महाभोज – मन्नू भण्डारी

4– वर्धमान रूपायन – कुँथा जैन

5– रंगदर्शन – प्रो, नेमिचन्द जैन पृ0 20

कथा–वस्तु नाटक में घटित समस्त घटनाओं और कार्यो की समुचित व्याख्या और अर्थबोध देती है। नारी लेखिकाओं ने ऐतिहासिक पौराणिक, सामाजिक , असंगत नाटक लिखे हैं। उनके नाटकों के अनुसार उनका कथ्य भी बहुआयामी है। आधुनिक सामाजिक ,मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत, विसंगतियों को प्रस्तुत करने वाले नाटकों में 'बिना दीवारों के घर, ' 'ठहरा हुआ पानी,' ' रेशमी रूमाल' , 'पवन चतुर्वेदी की डायरी', 'दिल्ली ऊँचा सुनती है', 'जादू का कालीन', 'एक औरअजनबी', 'सुनो शेफाली' हैं।

राजनैतिक परिस्थितियों को स्थापित करने वाले, शोषण के खिलाफ मूक प्रदर्शन के परिणामस्वरूप मन के अर्न्तद्वन्द को दर्शाने वाले नाटक 'संस्कार को नमस्कार', 'ओम क्रांति क्रांति', 'असुरक्षित ' हैं। प्रयोगधर्मी नाटकों में शीला भाटिया का 'दर्द आयेगा दबे पांव' उल्लेखनीय है। आज शिल्प के धरातल पर प्रयोगधर्मी नाटकों का निर्माण हो रहा है। इन नाटकों में कुछ व्यक्ति के महनीय चरित्र पर आधारित हैं , तो कुछ रंगमंच को लेकर नये प्रयोगों से जुड़े हैं । नुक्कड. नाटक भी जन्म ले चुका है । कुंथा जैन का नृत्य नाटक 'वर्धमान रूपायन ' भी बहुचर्चित है। हिन्दी नाट्य लेखिकाओं ने भी अनेक नये प्रयोग किये हैं। नारी नाट्य लेखिकाओं में 'मन्नू मंडारी 'का नाम बहु प्रशंसित है। मन्नू जी ने एकमात्र नाटक "बिना दीवारों का घर " लिखा। पर " बिना दीवारों का घर " का नाट्य साहित्य में अमिट स्थान है। अपने ही उपन्यास महाभोज का मन्नू जी ने नाट्य रूपान्तरण भी किया है

"बिना दीवारों का घर " एक पारिवारिक नाटक है। कथ्य को प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। कथावस्तु सामाजिक है । कथ्य की मूल धारणा शिक्षित पति –पत्नी के [illegible] सम्बन्धों पर आधारित है। आज के परिवेश में जहॉ पति– पत्नी दोनों शिक्षित हैं ,दोनों के लिए अपने–अपने अहं मुख्य हैं । आपसी सामन्जस्य का अभाव है । उनके बीच की कुंठा ,तनाव,घुटन, गलतफहमी नित्य उत्पन्न होने वाली समस्याओं का चित्रण है जिसका दोनों मिलकर भी समुचित समाधान नहीं खोज पाते । अजित के सहयोग से शोभा ऊॅची शिक्षा एवं नौकरी प्राप्त करती है। अजित को मित्र जयन्त का शोभा की सहायता करना पसन्द नहीं हैं । पुरुष आधुनिक होने के फलस्वरूप भी यह बात पसन्द नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी में कोइ दूसरा पुरुष रुचि ले। ये हमारे संस्कार हैं ,मानसिकता है , जिसे बदलना सम्भव नहीं है। शोभा पति की अवहेलना करके महाविद्यालय में प्राचार्य का पद स्वीकार कर लेती है पति–पत्नी में शंकाओ, गलतफहमियों का ऐसा टकराव होता है कि अन्तिम परिणति अलगाव में

होती है। इस संक्षिप्त वस्तु को संवेदना के स्तर पर अजित व शोभा के आपसी तनाव व घुटन को ऐसे स्वाभाविक सूत्रों के माध्यम से जोड़ा है कि कथ्य अत्यन्त मर्मस्पर्शी एवं सजीव हो उठा है। वस्तु प्रतीकात्मकता भी अत्यन्त सहज है। अजित व शोभा अपने वर्ग के प्रतिनिधि हैं। बिना दीवारों का घर पति– पत्नी की गलतफहमियों के परिवेश का प्रतीक है। जिसमें अजित व शोभा रहते हैं। नारी समझौते के लिए व्यग्र है। पर पुरुष अपने अहंकार के कारण झुकने को तैयार नहीं है। उसकी मानसिकता आज भी उतनी पुरानी है जो कि वास्तविक है। नारी जागरण शिक्षा के प्रचार –प्रसार तथा आत्मनिर्भरता ने नारी में भी स्व–अस्तित्व की भावना प्रबल कर दी है। वह अपमान व तिरस्कार नहीं सह सकती। उसका अहंकार भी न झुकने के लिए बाध्य करता है। फलतः दोनो का अलगाव कोई सुखद समाधान नहीं दे पाता। पात्रों का चयन विषय के अनुरूप हैं। भाषा का प्रयोग भी पात्रों के अनुसार है। जीजी परम्परावादी दृष्टिकोण की है। आदर्शचेतना से प्रभावित है, जो सब कुछ जोड़ना चाहती है। इस कथ्य के साथ ही मीना व जयंत की कथा चलती है। जयंत के गलत आचरण को सहन न करके मीना जयंत से अलग होकर समाज सेवा करने लगती है। वह जागरुक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। शोभा का आचरण समझौतावादी है। पर वह अजित की जिद के फलस्वरूप अपनी बेटी को छोड़कर अलग हो जाती है। ऐसा वह अपने अहं के संतोष के लिए ही करती है। भारतीय नारी की मानसिकता से अलग हो जाती है। अति आधुनिक नारी के वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। लेखिका ने कथ्य का सफलता के साथ निर्वाह किया है। जिन घरों की दीवारें मजबूत नहीं होती, वे घर टूट जाते हैं। अजित और शोभा के घर में आपसी विश्वास रूपी दीवार कमजोर है, फलतः वे अलग हो जाते हैं।

"महाभोज " मन्नू भंडारी का नाट्य रूपान्तर है। प्रस्तुत नाटक का कथ्य बेलहर्ष के हत्याकांड से प्रभावित है। " सन् 1975 से 1979 तक की राजनीतिक ,सामाजिक परिस्थितियों का या परिवेश का कलात्मक चित्रण मन्नू भंडारी ने किया है।" |1| महाभोज एक राजनीतिक नाटक है इसलिए इसमें मन्नू जी ने आज की राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार अनैतिकताएँ ,तिकड़मबाजी , अवसरवाद का यथार्थ चित्रण करके उसमें गुंडागर्दी छलप्रपंच का प्राधन्य दिखलाया है। बिसेसर पढ़ा लिखा है, गांव वालों को सही गलत का ज्ञान कराता है ,बेगारी करने को मना करता है।

1– महाभोज सृजन और समीक्षा – डॉ. जगन्नाथ चौधरी पृ. 113

गलत बातों का विरोध करता है ,तो उसकी हत्या करवा दी जाती है। पहले उसकी हत्या को आत्महत्या का रूप दिया जाता है,पर बाद में उसके मित्र बिन्दा को हत्या के आरोप में फॅसा कर जेल भेज दिया जाता है, क्योंकि वह जागरुक है, उसे सब ज्ञात है ,वह विरोध करेगा। बिसू की मृत्यु को हर पार्टी अपनी तरह से भुनाना चाहती है। राजनीति दलबदल की है, वोट की है। पुलिस जो जनता की रक्षक है वही भक्षक बन जाती है। प्रेस जो निष्पक्ष रहता है , उसे भी पेपर का कोटा चाहिए । निर्दोष होने पर भी शिकार होता है गॉव का आदमी । बिसेसर की मृत्यु राजनैतिक पार्टियों के लिए भोज्य है। लेखिका ने गीध को राजनैतिक नेताओं के लिए प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। " महाभोज" में राजनैतिक माहौल का मर्मस्पर्शी चित्र अंकित है, जो कथ्य की संवेदना को उजागर करता है। मन्नू भंडारी कथ्य के अनुरुप भाषा एवं पात्र का चुनाव करती हैं ।

विमला लूथरा का प्रसिद्ध एकांकी संग्रह " पचपन का फेर " हास्य और व्यंग से भरपूर है। व्यंग कटाक्ष के माध्यम से लेखिका ने अपने कथ्य को स्पष्ट किया है। लेखिका ने पंद्रह एकांकी का समावेश इस एकांकी संग्रह में किया है। समाज की हर समस्या की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है । सरकारी दफ्तरों के साहब लोग जो पूरी जिन्दगी सुविधा सम्पन्न होते हैं, रिटायरमेन्ट के बाद सारी सेवा छिन जाती है। पैसा तक सीमित मिलता है, जो घर खर्च के लिए पर्याप्त नहीं है। एक रिटायर्ड सरकारी अफसर की दयनीय स्थिति का हास्यात्मक चित्रण है। इन्हीं के लाइन क्लीयर तथा आवागमन में व्यंग्य का सार्थक प्रयोग दर्शनीय है। रेलवे विभाग ,फिल्म लाइन ,नीम हकीम प्रेस ,कलाकार ,गीतकार रेत और सीमेंन्ट का मिश्रण ,प्रोफेसर साहब , घूसखोरी, प्रीतिभोज ,आवागमन, बलिदान,गृहलक्ष्मी,जनता बेचारी , हर समस्या , का समावेश इन एकांकियों में किया है। विमला जी अपने कथ्य को स्पष्ट करने में सक्षम हैं। समाज की हर बुराई को कथ्य बनाकर बहुत ही रुचिकर ढंग से हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से वास्तविक रूप में ताना– बाना बुना है। विमला जी की नजर बहुत पैनी है तथा कलम की धार बहुत तेज । वे कथ्य के अनुरूप ही भाषा एवं पात्र का चुनाव करती हैं। इनके सभी एकांकी कथ्य की दृष्टि से रुचिकर हैं। वे अपने पात्रों के साथ गहरा तादात्म्य रखती हैं।

विमला रैना ने नाट्य साहित्य के क्षितिज पर अपने विविधरंगी नाटकों के इन्द्रधनुषी रंग भरे हैं। इनका नाट्य संग्रह आहें और मुस्कान सत्रह नाटकों के साथ प्रस्तुत है ।

इस संग्रह में सामाजिक ,ऐतिहासिक ,राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत नाटक हैं। वे मानवीय संवेदनाओं को उजागर करने में सक्षम हैं। उनके नारी पात्र आधुनिक मानसिकता के हैं ,पर भारतीयता उनकी नस– नस में व्याप्त है। काला सिन्दूर की सुमित्रा धोखे से पागल पति के साथ ब्याह दी जाती है। उसे किसी से कोई शिकायत नहीं है ,पर उसकी ननद इसी दु:ख से दु:खी है कि उसने एक अनजान लड़की के साथ धोखा किया । जाको राखे साइयॉ में रश्मि डिफेन्स में नौकरी करने वाले राकेश को प्यार करती है पर उसके घर वालों को डिफेंस की नौकरी पसन्द नहीं है,राकेश युद्ध में गया, फिर उसका समाचार नहीं आया । रश्मि की शादी हीरा नामक होनहार युवक से तय हो जाती है । रश्मि की भाभी राकेश के विषय में कहती है कि पता नहीं बेचारा जिन्दा है या नहीं । रश्मि विरोध करती है, भाभी आप उसका बुरा मत सोचो मैं हीरा से शादी कर लूँगी । लेकिन होता इसका उल्टा है। राकेश वापस लौट कर आता है और हीरा की एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो जाती है। लेखिका ने इस नाटक के माध्यम से हमारे मन में डिफेंस वालों की जिन्दगी के लिए जो डर बसा है उसे निकालने का प्रयास किया है। जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, उसका कुछ भी नहीं बिगड. सकता । धरती रूठ गई पूरी तरह गांव की माटी की महक लिए हुए है। लेखिका ने इस नाटक में इस प्रश्न का समाधान किया है कि गॉव के लड़के शहर जाकर वापस नहीं आते । अगर गांवों में सुविधाएँ हो , मनोरंजन के साधन हों तो गावों के लड़के अपने गांवों में रहना ज्यादा पसन्द करते हैं ।लेखिका ने गांवों में प्रचलित लोकगीतों का प्रयोग भी किया है –चम्पिया और दुलहनियॉ गाती है, – 'रहि –रहि याद तोरी आवे रे विदेसिया ' 1। उनकी कलम की धार बहुत पैनी है । सीधे– साधे किया कलापों द्वारा अपनी बात कहती हैं। गांव की औरतें पानी भरने जाती हैं, घर का काम करती हैं। वास्तविकता से उनका कथ्य पूरी तरह जुड़ा हुआ है। खाली साहब ',शायद, विकट समस्या, द्री क्रिटीक , तालियॉ, मृत्युका स्पर्श, उसके बाद ,नूरजहॉ कहॉ है, जहरीले कांटे ,यह स्वप्न भी नही,आकांक्षा सामाजिक नाटक हैं। जिसमें व्यंग्य की प्रधानता है। सभी कथ्य हमारे रोजमर्रा की जिन्दगी से संबन्धित है। बी0 ए0 बीबियॉ में समाज में पढ़ी– लिखी महिलाओं की मन:स्थिति को स्पष्ट किया गया है। बेलाजान जो एक तवायफ थी, अब होम में रहती है । उसकी मन:स्थिति के माध्यम से करारा व्यंग्य किया गया है। पूरे नाटक में हास्य का पुट दिया गया है । रोटी और कमल का फूल के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेम को दर्शाया गया है । स्वाधीनता संग्राम से जुडे. लोगों के प्रति उनका लगाव इस नाटक में व्यक्त हैं ।

बहादुरशाह जफर की सल्तनत तथा उस समय की परिस्थितियों को इस नाटक का कथ्य बनाया गया है। बहादुरशाह जफर को फिरंगी उनके शहजादों के कटे सिर तोहफे के रूप में पेश करते हैं, फिर भी बहादुरशाह जफर के मुँह से निकलता है –

"हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तख्त लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ।" 1–

विमला रैना के के नाटकों के कथ्य विविध रंगी है, किन्तु लेखिका सूक्ष्म से सूक्ष्म मनोभावों को व्यक्त करने में सक्षम है। अपने कथ्य की एक सूत्रता बनाकर रखती हैं। मानव मन की संवेदना में वे गहरे उतर जाती हैं! भाषा पात्रानुकूल है। सभी नाटकों के पात्र उसके विषय के अनुरूप हैं।

शांति मेहरोत्रा का नाटक ठहरा हुआ पानी बहुप्रशंसित व बहुचर्चित प्रतीक नाटक है। यह एक पारिवारिक नाटक है। परिवार की समस्याओं को प्रतीक के माध्यम से व्यक्त किया गया है। उनके पारस्परिक तनाव, कुंठा, घुटन को नाटक का कथ्य बनाया गया है। इनके आपसी सामंजस्य के अभाव में घर में कोई घर का माहौल नहीं है। पिता पुरातनपंथी है ,जिनके अंधविश्वासों व कठोर अनुशासन के कारण संतान दब्बू व कुंठित हो गयी है। वे अपनी मान्यताओं को लेकर चलते हैं। जिसके फल स्वरूप युवा बच्चे विद्रोह करते हैं। सीता जो 35 वर्ष की है, पर अविवाहित है ,स्वतंत्र रहती है। जो पिता को पसन्द नहीं है। छोटी बेटी-रमा रोज नये प्रेमी की तलाश करती है। अंत में एक ऐसे व्यक्ति को खोजती है,जिसकी पत्नी कैंसर से पीड़ित है। इस आशा के साथ कि जब उसकी पत्नी की मृत्यु हो जायेगी , तो उसका प्रेमी उससे व्याह कर लेगा। इतने कड़े अनुशासन का परिणाम पूरा परिवार ही तवाह हो गया। कोई भी स्वाभाविक राह पर चल नहीं पाया। लेखिका ने रोजमर्रा की तमाम घटनाओं को मनोवैज्ञानिक सूझ–बूझ से कथ्य के रूप में ढाला है। काफी हद तक हर घर में पीढ़ियों में अन्तराल दिखता है। लोग एक दूसरे को समझना ही नहीं चाहते । कथा का प्रारम्भ ही अंधविश्वास को बल देता हुआ होता है। रमा व सीता मंगला माता को चिट्ठिया लिखती हैं कि जो इस कड़ी को तोड़ेगा उसका सर्वनाश निश्चित है। अंत आशा के अनुरुप नहीं होता। निराश थके हारे कुंठित लोगों का भविष्य क्या है ? लेखिका अपने कथ्य को स्पष्ट करने में पूर्णतः सफल हैं। उनकी भाषा पात्रों के अनुकूल ही है।

1– आहें और मुस्कान– विमला रैना ,पृ. 214

एकांकी संग्रहित हैं। सर्पदंश एकांकी में सर्पदंश से पीड़ित रीता नाम की युवती को सरकारी अस्पताल में किन– किन हालातों से हो कर गुजरना पड़ता है। इन्सानियत शायद वहॉ जाकर लोगों के पास से दूर भाग जाती है। पूरे तंत्र का खुला चिट्ठा है यह एकांकी । किसी ढंग की कोई सुविधा नहीं है। पानी तक मरीज को नहीं मिल सकता । चपरासी भी डाक्टर से मिलने के लिए रोगियों से घूस मॉगता है। दिखावा ज्यादा है। लाइन में खड़े होना, पर्ची बनवाना आदि । उसमें भी डाक्टर की जान– पहचान का रोगी है , तो सारे नियम टूट जाते हैं। दूसरे एकांकी **किसी का इंतजार नहीं** में वृद्ध मॉ– बाप आज की पीढ़ी के लिए किस तरह भार बन जाते हैं, इसे ही स्पष्ट करने की कोशिश की है। आज हम इतने आधुनिक हो गये हैं कि स्वयं के जन्मदाता के लिए भी कुछ करना नहीं चाहते । एक थी मौसी में दूर की रिश्ते की मौसी कमला और राजेश को उनके घर में ही उन्हें पराया बना देती है। उन्हें बस मौसी कह देना ही गलती लगती है। मुंहबोले रिस्ते का अच्छा फायदा उठाना उन्हें आता है। अड़ोस–पड़ोस , मकान मालिक से रिश्ते खराब कर जाती है। नौकर तक को बिगाड़ जाती है। अपने–अपने दायरे में दादा जी,दादी जी एवं स्वीटी है। स्वीटी का लड़कों से दोस्ती रखना दादी को पसन्द नहीं है। उसके पुरुष मित्र घर आते हैं, और स्वीटी का उनसे बात करने का ढंग पसंद नहीं आता। हर आने वाले लड़के में कुछ ऐसा देखती है कि शायद इसी से स्वीटी की शादी हो। दादा जी भी ऐसा ही सोचते हैं। पर स्वीटी का अपना ढंग है। उसके सपने में कोई और है जिसे दादा–दादी नहीं जानते। लेखिका ने इस एकांकी में स्पष्ट करने की कोशिश की है कि सबके सोचने के भी ' अपने–अपने दायरे ' हैं। आतंक में दहेज से पीड़ित समाज का चित्रण है। मात्र स्कूटर के लिए कमला की हत्या सास एवं पति कर देते हैं। इस आशा में कि दूसरी शादी में उन्हें मनचाहा दहेज मिलेगा। उन्हें इतना पाप करने का कोई दुःख या ग्लानि का अनुभव नहीं होता। बस आतंक है कि उसके घर वाले जरूर पुलिस केस करेंगे। उसके लिए उन लोगों ने कोई प्रूफ नहीं छोड़ा है। ' तीसरा हिस्सा में चोर साह और पुलिस का चित्रण है। छोटे से एकांकी के माध्यम से लेखिका ने समाज तथा पुलिस डिपार्टमेन्ट पर तीखा व्यंग्य किया है। चोरी के माल में से भी तीसरा हिस्सा पुलिसमैन को चाहिए। एक और दिन एक प्रसिद्ध 'असंगत नाटक' है। ऐसा कोई दिन नहीं जो हम अपनी इच्छा से जी सकें। हमारे अपने सपने किस प्रकार टूट जाते हैं, देखते–देखते सब कुछ बदल जाता है , हम समझ ही नहीं पाते।

अपना ही सब कुछ बेगाना सा लगने लगता है जिसके साथ–हम तादात्म्य ही स्थापित नहीं कर पाते।

कुंथा जैन का वर्धमान रुपायन भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव पर जैन धर्म को आधार बनाकर लिखा गया नाटक है। इसमें उन्होंने तीन नाटकों दिव्य ध्वनि छंद (नृत्य नाटिका), वीतराग (मंचरूपक), मान स्तम्भ (रेडियो–रूपक) संग्रह है। इन नाटकों में महावीर भगवान के जन्म से निर्वाण तक की कथा वर्णित है तथा जैन धर्म की महत्ता को वर्णित किया गया है।

'शीला भाटिया' का संगीत नाटक दर्द आयेगा दबे पॉव है। यह नाटक 'फैज अहमद फैज' की शायरी एवं व्यक्तिगत जीवन दोनों को अपने में समेटे हुए है। उनकी नज्मों को चुन कर शीला भाटिया ने उपयुक्त स्थान पर प्रयुक्त किया है। उनके जीवन पक्षों में कुछ कल्पना का प्रयोग किया गया। पर जो कुछ भी काल्पनिक है, वह नाटक के कथ्य को रुचिकर बनाने के लिए ही है। शीला जी ने उन्ही नज्मों के संग्रह से कुछ नज्में चुनने का सफल प्रयास किया है। इतने प्रसिद्ध शायर के संग्रह में यह छॉटना कि कौन सी नज्में ज्यादा सुन्दर है,यह उल्लेखनीय कार्य है। शीला जी ने अपने कथ्य को स्वाभाविक ढ़ग से विकसित होने दिया है। कथा में एक सूत्रता अंत तक बनी हुई है। उनकी नज्मों को यथास्थान घटनाक्रम के साथ–साथ सप्रयास जोड़ा है। लेखिका ने उनकी शायरी के बहुमूल्य टुकड़ों को पाठक एवं दर्शक के समक्ष प्रस्तुत करनें का सफल प्रयास किया है।

" डॉ. कुसुम कुमार " हिन्दी नाटक जगत में एक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। वे नाटकों के माध्यम से तीव्र प्रतिकियाओं को मुखर करती है। इनके नाटकों के कथ्य जीवन के हर क्षेत्र को छूने में सफल हैं। इनके कलम की धार बहुत पैनी है। अपने कथ्य को हास्य व व्यंग्य का पुट देकर वे उसे बिल्कुल सजीव बना देती हैं। उनका नाटक ओम कांति –कान्ति कालेज के माहौल पर है। जो विद्यार्थी पढ़ना चाहते हैं, उनको भी पढ़ाने वाला कोई नहीं है। महिला कालेज के माहौल का चित्रण है। टीचर्स स्टाफ रूम में बाते करती है, कैंटीन से मॅगाकर नास्ता करती है। क्लास में आधा पीरीयड निकल जाने पर या छात्राओं के बुलाने पर जाती है। पढ़ाती भी हैं तो एक लाइन शुरु करके दूसरी बातों में लग जाती है। घर से कुछ पढ़कर आती नहीं है। आता–जाता भी कुछ नहीं है। जो बच्चे पढ़ना चाहते हैं, उनकी शिकायतें प्रिंसिपल से करती हैं क्योकि प्रिसिपल से उनके अच्छे सम्बन्ध है।

जो टीचर्स अपने कर्तव्य के प्रति सजग हैं, तथा अपने काम से लगााव रखती हैं, उनसे भी वे चिढ़ती हैं। इन सभी खूबियों का पूर्णतः समावेश मिसेज दानी के चरित्र में है। वे अपने वर्ग की प्रतिनिधि हैं। उनका चरित्र वास्तविक है। मिसेज दानी जैसा चरित्र हर कालेज में विद्यमान है। ऐसा माहौल ही लगभग हर कालेज का रह गया है। रावणलीला का कथ्य बिल्कुल अलग है। रावण मुख्य पात्र हैं। रामलीला की तरह ही आयोजन होता है। दर्शक हैं। रावण अपनी भूमिका के लिए ज्यादा पैसे मागता है। पैसे कम देने पर स्टेज पर आने के लिए मना करता है। उसे शराब भी चाहिए , पीने के लिए। पूरा नाटक रावण को मुख्य पात्र बनाकर लिखा गया है। भाषा तुकबन्दी की है, नौटंकी शैली में। पुरुष पात्रों ने ही स्त्री पात्रों का अभिनय किया है। नाटक अत्यन्त स्वाभाविक है। गावों में रामलीला समितियॉ जिस प्रकार रामलीला करती हैं, पूरा सजीव चित्रण किया गया है।

दिल्ली ऊँचा सुनती है का कथ्य त्रासदी से पूर्ण है। एक रिटायर्ड व्यक्ति की जिन्दगी के अनछुए पहलुओं की भयानक सच्चाई है प्रस्तुत नाटक। रिटायरमेन्ट के पश्चात पेंसन ही एकमात्र सहारा है। जो परिवार पूरी जिन्दगी दिल्ली जैसे शहर में रहा, वह गांव में रहने चला जाता है,केवल इसलिए कि वे खर्च वहन नहीं कर सकते। ऑफिस के रिकार्ड में माधोसिंह की मौत हो गयी। वे सामने खड़े है पर ऑफिस वालों को प्रूफ चाहिए। माधोसिंह के जिन्दा होने का। प्रूफ इकट्ठा करते–करते कई महीने व्यतीत हो जाते हैं। एक–एक पैसे को मोहताज हो जाता है परिवार । पूरा परिवार मकान मालिक पर आश्रित हो जाता है। रोज–रोज की परेशानियों से तंग आकर परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप उनकी बेटी नीति जहर खा लेती है। माधो सिंह के अथक प्रयासों के पश्चात् काम होता है,पर नाम की स्पेलिंग ही गलत हो जाती है। वह तब ठीक हो पाती है ,जब माधोसिंह के मरे भी चार महीने हो चुके हैं। हमारी व्यवस्थाएँ इतनी सुचारु रूप से कार्यान्वित होती हैं। यही हमारी ऑफिसों की सच्चाई है। सरकारी ऑफिसर इतनी गति से काम करते हैं कि इन्तजार करते–करते भगवान बुला ले पर ये लोग नहीं। लेखिका को इस नाटक की थीम किसी साप्ताहिक पेपर से मिली है जो सच्चाई ही है। लेखिका ने अपने इस छोटे से कथ्य को इतने सजीव व वास्तविक ढंग पिरोया है जो प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता। पवन चतुर्वेदी की डायरी एक थके हारे आदमी की कहानी है, जिसे किसी ने स्वीकार नहीं किया। वह अपनी डायरी जिस प्रकार लिखता है उसी ढंग से नाटक प्रारम्भ होता है। वह एक सफल नामी डॉक्टर का पुत्र है।

बहुत सुन्दर और होनहार है। पर हीरो बनने के चक्कर में घर छोड़ता है। उसके बाद सब उसे ही छोड़ने लगते हैं। वहाँ से निराश होकर नौकरी करता है। पर वह कहीं भी स्थिर नहीं हो पाता ।नौकरी बदलते– बदलते चालीस साल की उम्र आते– आते वह एक लाइब्रेरी में अवैतनिक सर्विस करता है। पत्नी भी बच्चों को लेकर अलग हो चुकी है। पिता उसी शहर में रहते हैं पर वह बहुत सालों से घर नहीं गया है। बूढ़े पिता खुद ही मिलने आ जाते हैं बहन है, पर कोई सम्बन्ध नही है। पिता की मृत्यु पर भी वह इकलौता पुत्र है, पर उपस्थित नहीं है। उसे उसके जीवन की सच्चाई तब समझ आती है जब सब कुछ तहस– नहस हो चुका । उसने अपनी जिन्दगी खुद गढ़ी, किसी के आदर्शों पर नहीं चला । पवन की मानसिक वेदना को ,उसकी खुशियों को लेखिका ने उभारने की पूरी कोशिश की है। कथ्य में एक सूत्रता है। मनोवैज्ञानिक कथ्य को भी लेखिका ने वास्तविक ढ़ंग से प्रस्तुत करके रुचिकर बनाया है। **संस्कार को नमस्कार** का मुख्य पात्र राजनेता है। कथ्य को हास्य व व्यंग का पुट देकर प्रस्तुत किया है, पर पूरा कथ्य एक वास्तविक त्रासदी है। सेक्स एक्सप्लायटेशन को लेखिका ने इस नाटक के कथ्य के लिए चुना है। संस्कार नेता है। जो महिला आश्रम के निरीक्षण के लिए आता है। महिला आश्रम में छोटी बच्चियों से लेकर बड़ी उम्र महिलाएँ हैं, जो असहाय हैं, बेसहारा हैं। संस्कार सभी लड़कियों को बेटी कहता है, पर बेटी शब्द की महत्ता नहीं समझता ।उसके कृत्य तो पशु सदृश है। कमो बेन जो आश्रम की संचालिका हैं। वे संस्कार की सारी सुविधाओं को एकत्र करती हैं । क्योंकि इन्ही पैसों से उनकी दो बेटियों के हॉस्टल का खर्च निकलता है। 'संस्कार' संस्कार को कहीं छू तक नहीं गये हैं। संस्कार राजनेताओं के वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। नेताओं की मानसिकता का स्वाभाविक चित्रण है। नाटक का कथ्य सशक्त व रुचिकर है। **'सुनो सेफाली '**भी सामाजिक नाटक है। सेफाली नाम की हरिजन युवती एक समाज सेवक के पुत्र बकुल से प्यार करती है। उसे इस प्यार से इन्कार नहीं है। किन्तु बकुल चाहता है, कि वह सेफाली से चुनाव के पहले शादी कर ले। क्योंकि इस शादी से उन्हें वोट प्राप्त करने में लाभ मिलेगा । सेफाली को दया नहीं चाहिए ,उपकार नहीं चाहिए । पूरी जिन्दगी दूसरों की दया चाहती तो बहुत मिलती पर वह हमेशा से इस बात से दूर भागती रही ,क्योंकि वह भी सामान्य है,फिर इतनी सहायता क्यों ले ।घर में माँ उससे नाराज रहती थी ,पर उसे यह सब स्वीकार नहीं। आज जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय वह अपने हिस्से वही सब क्यों स्वीकार करे ।उसका अहं अभी भी जिन्दा है।

सेफाली को बूआ के घर भेज कर सर्वसम्मति से उसी की अपनी बहन की शादी बकुल से हो जाती हैं। सेफाली जब लौट कर आती है, मन्दिर में एक नवविवाहित जोड़े को देखती है । वह नवदम्पति बकुल और किरन हैं। वह आश्चर्यचकित है कि उसकी अपनी बहन ने सब कुछ जानते हुए भी ऐसा किया । सेफाली ने अपने अहं की रक्षा तथा बकुल की दया न लेने के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया । कुसुम कुमार ने अपने कथ्य को बखूबी प्रस्तुत किया है। उनके कथ्य में एकसूत्रता हमेंशा बनी रहती है। उनके पात्र वास्तविक धरातल पर रहते हैं। कुसुम कुमार के विषय में डॉ0 विजयकान्तधर दूबे का कथन है। –

''कुसुम कुमार की ओम क्रांति –क्रांति राजनैतिक चिन्तन से प्रभावित हैं इसमें आधुनिकताओं की ऐसी विद्रोहपूर्ण जिन्दगी प्रस्तुत की गई है।, जो अहं के दिखावे में सदियों की काराबद्ध प्रथाओं , जुल्म लादने वाले शिक्षकों, शोषकों तथा व्यवस्था के खोखलेपन के प्रति क्रांति की घोषणा करती है। अत्याधुनिक नाटककारों ने नारी–जागरण के चित्रण क्रम में उसके प्रत्येक उलझन भरे प्रश्न को सच्चे अर्थो में देखा है तथा उसके प्रति उदारतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है।''1–,

'मृदुला गर्ग ' कानाम हिन्दी साहित्य के लिए किसी परिचय की आवश्यकता नहीं रखता है। वे प्रसिद्ध नाट्यकर्मी हैं। उनके नाटक एक और अजनबी को 1977 में आकाशवाणी से प्रथम पुरस्कार मिल चुका है। इसके अनेकों सफल मंचन हो चुके हैं। 'एक और अजनबी ' दाम्पत्य जीवन पर आधारित असंगत नाटक है। प्रस्तुत नाटक में यह स्पष्ट किया है, कि आज दाम्पत्य जीवन की सबसे सुन्दर सच्चाई सेक्स का भी रूप बदल चुका है। दो जोड़ों को दिखाया है। एक अविवाहित जोड़ा है,जो बहुत खुश है। नायिका शानी को उनका प्यार आकर्षित करता है। वह अपने जीवन में वैसा ही चाहती है। इन्दर को प्यार करने के बाद मॉ पिता की पसन्द किन्तु स्वयं की मर्जी से जगमोहन से विवाह करती है। जगमोहन हर तरह से योग्य है। उनका अपना एक बेटा भी है। जगमोहन अपनी नौकरी से असंतुष्ट है। शानी को अपनी जिन्दगी से वे खुशियॉ नहीं मिलती । इन्दर वापस आता है। जगमोहन इन्दर को खुश करने के लिए घर पर बुलाता है। अपनी ऑखों के सामने इन्दर व शानी को सीमाओं का अतिक्रमण करते देखता है। पर उसे भी कोई विरोध नहीं है। शानी को लगता है कि वह

1– साठोत्तरी हिन्दी नाटक – डॉ. विजयकांतधर दूबे पृ0 62

इँदर में सब कुछ पा लेगी , किन्तु उसे निराशा ही हाथ लगती है। क्योंकि वह बगल वाले जोड़े की तरह जीना चाहती है। शानी अति आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। अगर वह चाहती तो इंदर का इंतजार कर सकती थी ,पर उसके अहं को चोट लगती है कि इन्दर उसे छोड़ गया है। पति जगमोहन हर तरह से अच्छा है पर वह उसके लिए भी पूर्णरूपेण समर्पिता नहीं है। शादी के पहले भी उसके इंदर से सम्बन्ध थे । वह कहीं से भी भारतीय नारी के आदर्शों को नहीं छू पाती । मणि जो शानी की सहेली है, इंदर से प्यार करती है किन्तु उसका प्यार जीवन के स्वाभाविक रूप में है। उसका कहना है कि उसे बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ,इंदर स्वयं जान जायेगा । शानी को कुछ भी नहीं मिल पाता । सब कुछ के बाद भी जो प्राप्त करती है, वह जो चाहती थी, वह नहीं है। उससे भी संतुष्ट नहीं है वह । लेखिका ने अपने कथ्य को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है। यह नाटक काम सम्बन्धों को लेकर है पर बहुत खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया गया है।

तुम लौट आओ भी पारिवारिक नाटक है। मीता एक घरेलू लड़की है। वह भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी जिन्दगी में पति ही सर्वस्व है। उसकी खुशियों के बीच वह बाधक नहीं बनती । यथायोग्य सहयोग करती है। बूआ तथा ससुर का भी ध्यान रखती है। वे भी उसे प्यार करते हैं। पति की अमेरिका जाने की जिद को भी बिना कुछ बोले स्वीकार करती है बल्कि पार्टटाइम सर्विस करके पैसों का भी इंतजाम करती है। किन्तु पति जब एबार्शन के लिए बाध्य करता है,तो उसकी बात नही मानती । उसकी माँ भी यही चाहती है। अंत तक अपनी बात पर दृढ़ रहती है। पति एअरपोर्ट तक जाकर वापस आ जाता है । विजय मीता की ही होती है ,जो स्वाभाविक है । उसमें स्वाभिमान भी है क्योंकि जिस पति को पाना ही उसकी जिन्दगी की सारी इच्छा थी, उससे ही अलग होते समय वह एक बार भी नहीं रोकती,न मना करती। पति के वापस आने पर कारण पूछती है तो वह बताता है तुमने रोका नहीं इसलिए मैं वापस आ गया। सारे रिस्ते स्वाभाविक रुप से अपने मधुर रूप में हैं। कथ्य बहुत रुचिकर है। जादू का कालीन बाल मजदूरों की समस्या को लेकर लिखा गया नाटक है। छोटे–छोटे बच्चों की अँगुलियों की कहानी है " जादू का कालीन "। बच्चों की अँगुलियों की दर्द भरी दास्तान। प्रति इंच जितनी ज्यादा गाठें होंगी उतना ही महगा होगा कालीन। इसलिए काम में बच्चों की अँगुलियाँ बार–बार कटती है। कटते–कटते अपनी लचक खो देती है और वे बच्चे कालीन बुनने के लिए बेकार हो जाते हैं। सूखाग्रस्त क्षेत्रों से इन बच्चों को सौ– पचास रूपये में खरीदा – बेचा जाता है, और इनके माध्यम से डॉलर कमाए जाते हैं।

ये गरीब बच्चे जेल की तरह रहते है। इनके ऊपर इतनी निर्ममताएँ है ,फिर भी सपने देखते हैं। एक दूसरे के दुःख—दर्द को समझते हैं। कहानी सुनते—सुनाते हैं, जो स्वाभाविक है। उनकी सहायता करने के लिए पत्रकार , समाजसेवी आते हैं, पर उन्हें पुनर्स्थापित करना मुश्किल है। वे पिसते ही जाते हैं। वे सम्पूर्ण आदर्श श्रेष्ठ गॉव की कल्पना करते हैं ,हर उस भारतवासी की तरह जिसकी गांधी में आस्था थी, है और रहेगी। लेखिका ने मार्मिक विषय को अपना कथ्य बनाया है। इस संवेदना का निर्वाह अन्त तक किया है। कथ्य अपने स्वाभाविक ढंग से चलता है। भाषा का प्रयोग पात्रानुकूल है।पात्र तो ज्यादा बच्चे हैं उनके खेल— खेल में कविताओं को प्रयोग किया है जो बोलते रहते हैं। अंत भी हृदय स्पर्शी है। लड़कियों को ब्याह के लिए भी बेचा जाता है। वे बच्चियॉ है,इसे भी खेल समझती है। जादू के कालीन पर बैठकर उड़ जायेगी वे। सभी को पूरी तरह झकझोर कर रख देने वाला नाटक है '' जादू का कालीन'' ।

'डॉ. सरोज बिसारिया'' के नाटक ऐतिहासिक पृष्टिभूमि से है। किन्तु उन्होंने इतिहास के साथ—साथ कल्पना का अनूठा संगम किया है। अकथ कहानी प्रेम की'' 13 वीं शताब्दी के राजा गोविन्दचन्द्र के राज्य की घटना पर आधारित है। उनकी नगरी पुष्पावती का वर्णन है। नगरी नाम के अनुरूप ही फूलों से भरी हैं। मन्दिर है। कला का सम्मान है, किन्तु राजा वर्ण व्यवस्था पर ज्यादा बल देते हैं। इसी से असंतुष्ट होकर माधव देश छोड़ देता है। नर्तकी कामकन्दला को राजा ने पहले बाहर भेज दिया है। किन्तु राजा को अपनी भूल का एहसास होता है। युवराज विनोद उन्हे समझाते हैं। राजा कामकन्दला तथा माधव को ससम्मान वापस बुलाते हैं। लेखिका ने प्रेम के उदात्त रूप का वर्णन किया है। काम कन्दला जो माधव से जीवन से भी ज्यादा प्यार करती है। माधव से विवाह करना ही उसके जीवन की सबसे बड़ी इच्छा थी। वह स्वयं को महाकाल के चरणों में अर्पित कर देती है। देवदासी बनने के लिए उज्जैन चली जाती है। वह प्रेम को शुचिता और दिव्यता ही नहीं,अमरत्व देना चाहती हैं। डॉ. बिसारिया के नाटक नगरेषु कांची में कांची के गौरव का वर्णन है। इस नाटक में लेखिका ने कांची में स्थित मंदिरें,शिल्पी,आयनर,प्रसिद्ध नर्तकी शिवकामी ,संत नावुक्करशर है। महाराज व राजकुमार के माध्यम से कांची के असीम वैभव को अंकित करने का प्रयास किया है। कांची के साथ—साथ युवराज मामल्ल व शिवकामी का प्रेम भी दिखाया गया है। महाराज शिवकामी को समझाते है कि वह तो देवत्व के भोग के लिए है, मनुष्य के लिए नहीं।

वह तो पूजा के लिए है। शिवकामी को देश के लिए मानवीय संवेदनाओं को त्याग कर देवी बनना पड़ता हैं। लेखिका ने दोनों नाटकों में देश प्रेम को सर्वोपरि स्थान दिया है। नारी की महत्ता को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है। नारी स्वयं में शक्ति है,वह समर्थ है , त्यागमयी व रागमयी है। उनके नायकों के मुख्य पात्र नारी है और अति विशिष्ट है। सरोज बिसारियॉ को नृत्य संगीत का पूरा ज्ञान है और बहुत लगाव है जो इनके नाटकों में परिलक्षित होता है । लेखिका अपने कथ्य को सफलतापूर्वक स्पष्ट करने में सक्षम है। नाटक अतिरुचिकर है। भाषा का प्रयोग भी पात्रानुकूल है। प्रेम प्रसंगों में भाषा अति मधुर है। लेखिका को इतिहास का भी गहन ज्ञान है,ऐसा नाटकों में परिलक्षित होता है

त्रिपुरारी शर्मा एक सुप्रसिद्ध नाट्य लेखिका हैं। उनके नाटक बहू ,अक्स पहेली,और रेशमी रूमाल बड़ी गहरी सहानुभूति से भारतीय नारी मन का चित्रण करने वाले नाटक हैं। 'त्रिपुरारी शर्मा 'ने अपने नाटक 'रेशमी रूमाल 'मे नारी मन की गहराई को छूने का सफल प्रयास किया है। नारी होने के कारण वह इस परेशानी को अच्छी तरह समझ सकी हैं। सुलक्षणा जो नाटक की मुख्य पात्र हैं,मॉ, भाभी ,पत्नी इत्यादि की भूमिकाएँ निभाते हुए अपनी आन्तरिक संवेदना को सुलाए रखती हैं। पति काफी सालों से दूर रहते हैं। देवर ,नवपरिणीता देवरानी , छोटी तेरह –चौदह साल की बेटी , तीन साल की उम्र में विधवा हुई फूफी, एक अनाथ मामी ,तथा एक ससुराल से आती रहने वाली ननद के साथ अपने पति के घर में रहती है। वह संवेदनशील है,उसे पति के दूर रहने का कारण भी ज्ञात नहीं है,किन्तु कोई शिकायत नहीं है। वह संयमित व संतुलित जीवन जीती है। घर में किसी ने उसकी ऊँची आवाज नहीं सुनी । पति कुछ दिनों के लिए घर आते हैं । होली का त्योहार है। घर में चहल पहल हैं। होली गाने वाले आते हैं। सुलक्षणा के मन में क्या चटकता है वह होली वालों के साथ नाचती है। इतना नाचती है कि बिन्दी ,चूड़ी तक का ध्यान नहीं रहता । सब पकड़ते है, रात को अकेले घर से चली जाती है। देवर रोहित खोज कर वापस जबरदस्ती ले आता है। पहले सुलक्षणा का जीवन रेशमी रूमाल सदृश सुन्दर था। उसने अपने मनोभावों को दबा रखा था। सभी आदर करते थे। रेशमी रूमाल का सुन्दर कोना दिखता रहा, सब कुछ व्यवस्थित रहा। जैसे ही रूमाल को हवा का झोंका लगा। वह फड़फड़ा उठा, उसका जीवन अव्यवस्थित हो गया। परिवार वालों के मन में सुलक्षणा को जो बुत बना था,टूट गया। लेखिका ने रेशमी रूमाल को प्रतीक बनाया है। प्रतीक के माध्यम से कथ्य को स्पष्ट किया है।

नाटक का कथ्य अनूठा है। बिल्कुल अछूता विषय लेकर नारी मन की संवेदना को उभारा है। लेखिका ने नारी मन की पीड़ा , घुटन को मनोवैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किया है।

त्रिपुरारी शर्मा के विषय में प्रतिभा अग्रवाल का कथन है –" त्रिपुरारी निश्चित रूप से एक सशक्त नाटककार के रूप में उभर रही हैं । भारतीय समाज की नारी की छोटी–बड़ी खुशियों , इच्छाओं , उसकी व्यथा– कथा, उत्पीड़न आदि को बड़ी गहराई से पकड़ा है, और उसका प्रभावपूर्ण ढंग से नाटकीय संयोजन किया है। त्रिपुरारी नारी मन की आशा,आकांक्षा और गुत्थिओं का ही चित्रण करती रहें तो भी कोई हर्ज नहीं । पर हमें विश्वास है कि वे भविष्य में अपने क्षेत्र का विस्तार करेगी और केवल नारी समस्याओं की चित्रण करने वाली नारी नाटककार तक ही सीमित नहीं रह जाएंगी।"–1

'ममता कालिया 'के एकांकी संग्रह आप न बदलेंगे में पॉच एकांकी संग्रहित हैं। सभी एकांकी सामाजिक हैं। आप की छोटी लड़की में घर में दो लड़कियां हैं। मॉ पिता सदैव अपनी बड़ी लड़की की प्रसंशा करते हैं। उसे नृत्य गायन व अभिनय में पुरस्कार मिलते हैं। घर के कामों में उसे रुचि नहीं है। छोटी लड़की पढ़ने में अच्छी है। घर के सारे काम भाग –भाग कर करती है। वह अति संवेदनशील है। पर उसे किसी से प्रशंसा नहीं मिलती । घर में आये मेहमान साहित्यकार की मेहमानी छोटी तूर्णा ही करती है, उन्हें तूर्णा में ढेरें खूबियॉ दिखती हैं। उसकी आवाज में एक संस्कार हैं , अगर साहित्य में वारिस जैसी कोई चीज है तो , साहित्यकार की वारिस बनने की योग्यता रखती है। जिस बात को अपने माता पिता नहीं समझ पाते , कुछ घंटे के लिए आया हुआ आदमी समझ जाता है। तूर्णा का व्यक्तित्व भी विशिष्ट हो जाता है। आत्मा अठन्नी का नाम है में दहेज को ले कर झेलती वन्दना की कहानी हैं केवल पैसे का महत्त्व है और किसी चीज की कोई कीमत नहीं है। यह समस्या हर घर में, हर जगह देखने को मिलती है। आज हमारे संस्कार इतने गिर गये हैं, सोचने समझने की आवश्यकता ही नहीं है। दूसरे घर की लड़की भी लड़की है। यह भी सोचना नहीं पड़ता। कल हर लड़की बहू बनने वाली हैं । आप न बदलेंगे में एक परिवार की कहानी है। जहॉ पत्नी अपने बच्चों तथा अपने पति के व्यवहार से परेशान हैं।लेखिका ने जिन्न तथा एक युवक व बच्चों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जो कुछ हो रहा है वह स्वाभाविक है। आप न बदलेगें की नीता को पति व बच्चे नहीं,कठपुतले चाहिए।

1– नटरंग अर्धशती विशेषांक – 1989 प्रतिभा अग्रवाल पृ0 32

यहाँ रोना मना है में कालिन्दी की माँ की मृत्यु हो गयी है फिर भी वह मायके नहीं जा सकती क्योंकि उसके देवर का तिलक है। घर में शुभ प्रसंग है, इसलिए वह अपनी माँ की मृत्यु पर रो भी नहीं सकती । शादी के बाद रोने के लिए भी ससुराल वालों की आज्ञा की आवश्यकता होती है। जान से प्यारे में प्रोफेसर ने ऐसी दवा का आविष्कार किया है , जो मरे हुए लोगों में जान डाल दे। अपनी दवा लेकर वे चार मृतक के घर वालों से मिलते हैं पर कोई भी उनकी दवा का प्रयोग करना नहीं चाहता । कल तक जो इतने प्रिय थे ,आज किसी को भी उन्हें वापस पाने की इच्छा नहीं है। ममता कालिया ने अपने सभी एकांकी में जिस समस्या को उठाया है उसका निर्वाह किया है। सभी एकांकी हमारे समाज के ऊपर व्यंग्य है। हमारी मानसिकता,संस्कार के ऊपर सीधा प्रहार किया है। अपने कथ्य को स्पष्ट करने में पूर्णतः सफल है।

" डॉ. मृणाल पान्डे " का नाम हिन्दी साहित्य के लिए सुपरिचित है। मृणाल पाण्डे ने अपने नाटकों से हिन्दी साहित्य को अभिवृद्ध किया है। मृणाल पान्डे का नाटक आदमी जो मछुआरा नहीं था अपनी तथा परिवार के लोगों की महत्वाकांक्षाओं में पिसते व्यक्ति की कहानी है, जो ह्दयस्पर्शी है। एक दुखान्त नाटक है। नन्द दुलारे को एक दिन एक मछली मिलती है, साधारण मछली नहीं,पूरे समन्दर की रानी। वह उससे वरदान माँगता है एक,दो,तीन। पर जैसे–जैसे वह पाता जाता है उसका अपना सब छूटता जाता है। वह मछुआरा तो है नहीं। समेट नहीं पाता। अपने घर परिवार , बुजुगों व बच्चों के लिए उसके पास समय नहीं है। दद्दाजी उसको याद करते स्वर्ग सिधार जाते हैं। किन्तु उसको बताया नहीं जाता क्योंकि विदेश से कोई डेलिगेशन आया है। माँ–पिता नहीं रहते। बच्चे पिता के बिना बड़े होते हैं। लड़के की विदेश में मृत्यु तथा पत्नी पागल हो जाती है। देश को उसकी आवश्यकता एँ थीं ,उसने कला दीर्घाएँ बनायी, बन्द पड़ी कम्पनियों को चलवाया, जिसके विकास के लिए पूरी जिन्दगी लगा दी लोग उसके खिलाफ इन्क्वायरी बैठा देते हैं। पूरा नाटक आदमी की जिन्दगी की त्रासदी की कहानी है। उसका अपना कुछ भी नहीं है। जिन लोगों को वह पसन्द नहीं करता उन्हीं लोगों से घिरा रहता है। उसके घर के सदस्य की तरह रहते हैं वे लोग। नाटक के कथ्य में वास्तविकता है। अति महत्वाकांक्षी होने के परिणाम तो भुगतने पड़ते हैं। मृणाल पान्डे ने संवेदना का निर्वाह किया है। वास्तविक क्रिया कलापों के माध्यम से कथा

आगे बढ़ती है।

डॉ. गिरीश रस्तोगी प्रसिद्ध नाट्य लेखिका,रंगकर्मी,नाट्य समीक्षक है। अपनी समीक्षा पुस्तकों के माध्यम से नये मानदण्ड स्थापित किए हैं। नाटक,एकांकी,रेडियो नाटक,बाल नाटक,कहानी,कविताएँ साहित्य की कोई विधा उनकी लेखनी से अछूती नहीं हैं। महत्वपूर्ण उपन्यासों कविताओं और कहानियों के नाट्य रुपान्तर से नाट्य जगत में काफी प्रसिद्धि मिली। इनके नाटक आज की परिस्थितियों से जुड़े हैं। हमारी सामाजिक परिस्थितियों, राजनीतिक परिस्थितियों से पूर्णतः तादात्म्य रखती है। पारिवारिक सम्बन्धों में कितना परिवर्तन आ गया है, इनके नाटकों में स्पष्ट दिखाई देता है। गिरीश रस्तोगी के नाटकों के विषय में कुछ भी लिखना चन्द्रमा को दीपक दिखाने जैसा है। असुरक्षित में कालेज के विद्यार्थियों तथा समाज की स्थिति को इंगित किया गया है। हर जगह दंगे ,फ़साद तथा हड़ताल का वातावरण है। जहॉं हमारा आज ही सुरक्षित नही है,वहॉं भविष्य के विषय में क्या सोच सकते हैं। अपने हाथ बिकानी में एक ऐसी लड़की बिन्दू की कहानी है जिसकी मॉं नही है। पिता उसकी परवरिश करते हैं। उसे अपने जीवन में हर निर्णय लेने की छूट है। वह रिसर्च कर रही है महिलाओं की परिस्थितियों पर । उसका निर्णय यह है कि उसे शादी नहीं करनी है। पिता समझाते हैं फिर हर पिता की तरह उनका भी पुरुषत्व जाग जाता है।उसे मारते हैं, घर में बन्द कर देते हैं ,तथा बात बन्द कर देते हैं। उन्हें अपनी बेटी पर शक है। ऐसी परिस्थितियां आज हर जगह देखने को मिलती हैं। जब कि बिन्दू के मन में कुछ भी ऐसा नहीं है। उसका दोस्त प्रवीन जो काम के सिलसिले में उससे मिलता है पर बिन्दू के मन में उसके लिए दोस्त से ज्यादा कुछ नहीं है। वह घर मिलने आता है। प्रवीन को देख कर उसे लगता है कि यह उसे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता है। जब पापा की पसन्द के लड़के से जबर्दस्ती शादी करनी पड़ेगी तो उससे अच्छा अपनी पसन्द से करे । उसके लिए वह बदनामी भी सहन कर लेगी । नहुष मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य पर आधारित है। यह केवल नाट्य रूपान्तर नहीं है बल्कि लेखिका ने महाभारत तथा अन्य स्त्रोतों से लेकर इसे एक मौलिक कृति बनाने का पूर्णतः प्रयत्न किया है। लेखिका ने साकेत की प्रसिद्ध पंक्तियों और भारत– भारती के काव्याशों का प्रयोग इस प्रकार किया है कि उससे मैथिलिशरण गुप्त का व्यक्तित्व प्रतिष्ठित होता है। दूसरी ओर 'नहुष' नाटक का आरम्भ संस्कृत नाटकों के 'पूर्व रंग विधान ' की तरह वातावरण निर्माण करता है और दर्शकों को सर्वथा भिन्न लोक में ले जाता है। तथा 'नहुष 'के

कथा–विकास तथा कथा अंत की पृष्ठभूमि भी तैयार करता है।'

भारत–भारती'की 'हम कौन थे क्या हो गये 'पंक्तियॉं इस पूरे आलेख का ,उसके आरोहों अवरोहों का आधार स्वतः बन गयी हैं। नाटक सब प्रकार से इन्हीं पंक्तियों के साथ दर्शक से संवाद करने की स्थिति में होता है। आगे चलकर यहि पंक्तियॉं कभी नहुष के उन्माद ,भोग विलास से जुड़ती हैं,कभी उसकी भयानक स्थिति को देख कर भय का कारण बनती है, कभी कोध से जुड़ जाती है,कभी हास्य व्यंग्य से और कभी करुण रस की अभिव्यक्ति करती हैं।पंक्तियॉं वहीं हैं पर उसके संदर्भ बदल जाते हैं। रस, लय, टोन, ध्वनि बदल जाती है। वृहद् जनसमूह तक पहुॅंचने में ये पंक्तियॉं अपना सानी नहीं रखती। लेखिका ने नहुष के चरित्र को सभी तरह से प्रकाशित करने की कोशिश की है। उसका तेजस्वी पौरुष से परिपूर्ण रुप,दूसरा इन्द्रलोक में देवत्व प्राप्त करने पर उसका मानवीय द्वंद, प्रजा तथा पृथ्वी को त्याग करने का क्षोभ,तीसरा देवलोक में भोग विलास,अहं से ग्रस्त हो जाना ,चौथा सप्तऋषियों के साथ अन्याय, शापग्रस्त होकर पृथ्वी पर गिर जाना, आत्मविश्लेषण तथा जीवन सत्य को प्राप्त करना। लेखिका के कठिन श्रमसाध्य परिश्रम के परिणाम स्वरुप नहुष एक उल्लेखनीय कृति बन गयी है। भाषा पात्रों के अनुकूल है। लेखिका अपने कथ्य को स्पष्ट करने में पूर्णतःसफल हैं।

स्वरुप कुमारी बख्शी 'का एकांकी संग्रह मैं मायके चली जाऊॅंगी , अपने हास्य–व्यंग्य से परिपूर्ण एकांकी के लिए प्रसिद्ध है। इसमें पॉंच एकांकी संग्रहित हैं।'मैं मायके चली जाऊॅंगी' में लेखिका ने नायिका माला के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि पति– पत्नी की नोंक– झोंक में पत्नी हमेशा पति को धमकी देती है कि वह मायके चली जाएगी। पति बेचारा कहॉं जाएगा। वह हारकर हथियार डाल देता है। विवाह का विज्ञापन में नरेश विवाह के लिए विज्ञापन देता है किन्तु प्रेस वालों की गल्तियों के कारण वह नौकरी का विज्ञापन हो जाता है। अन्त में वह अपने कार्य में सफल होता है। लेखिका ने दो दोस्त नरेश व सुरेन्द्र तथा दो सहेलियॉं कुमकुम व टुनटुन के माध्यम से अपने कथ्य को खूब रुचिकर बनाया है। मन पसन्द की शादी में मॉं अपने बेटे की शादी दहेज लेकर करना चाहती है। दहेज देने वाले उनके हिसाब से नहीं मिलते और वे रिस्ता पक्का नहीं कर पाती। इसी बीच उनका बेटा राजू अपनी पसन्द की लड़की सुनीला से शादी कर लेता है तथा उनके नौकर बंशी की शादी नौकरानी चमेली से करवा देता है। मॉं सुनीला को पसन्द नहीं करती थी, पर राजू मॉं

को वे सभी चीजें लाकर दे देता है जो वे दहेज में चाहती थीं,तो वे सुनीला को खुशी –खुशी स्वीकार कर लेती हैं बल्कि वही सुनीला उन्हें चॉद सी खूब सूरत दिखती है। नई पड़ोसन में रानी के पड़ोस में नीलिमा नाम की खूबसूरत लड़की अपनी मॉं के साथ रहने आती है। रामचन्द्र उसकी यथासम्भव सहायता करते हैं। यह बात रानी को उसकी नौकरानी नमक–मिर्च लगाकर बताती है। रानी बुरी तरह नीलिमा से झगड़ती है। उसी बीच रामचन्द्र के दोस्त मनोज बताते हैं कि वे नीलिमा से ब्याह करने वाले हैं तथा उसी से प्यार करते है।समस्या का हल अच्छी तरह हो जाता है। " अधिकारों के युग" में लेखिका ने यह दिखया है कि सभी हड़ताल पर जाने वाले हैं। सभी को अपने अधिकार चाहिए। घर की गृहिणी भी हड़ताल पर जाती है। पर उसकी हड़ताल के कुछ घंटे में ही घर की कायापलट हो जाती है। लेखिका ने कथ्य को हास्य का पुट देकर प्रस्तुत किया है। एक पढ़ा लिखा पुरुष घर के हर काम से अनभिज्ञ है। वह गृहिणी के बिना एक दिन भी घर नहीं चला सकता । सभी को अधिकार चाहिए पर अपने कर्तव्यों का ध्यान किसी को भी नहीं है। 1967 में इस पुस्तक को उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से पुरस्कार भी मिल चुका है। अधिकांश एकांकी आकाशवाणी से प्रसारित किए जा चुके हैं। स्वरुप कुमारी बख्शी के एकांकी आकार – प्रकार से तो छोटे है पर " नाविक के तीर" की भॉंति गहरे प्रभाव डालते हैं। लेखिका ने इनके माध्यम से समाज पर तीखा व्यंग्य किया है। वे अपने कथ्य में पूर्णतः सफल हैं।

"सावित्री रांका " की पुस्तक एक और आवाज में छह एकांकी संग्रहीत हैं। प्रतिशोध की कथा ऐतिहासिक है। सम्राट अशोक की रानी "तिष्यरक्षिता" जिससे अशोक ने वृद्धावस्था में विवाह किया था। वह सम्राट अशोक के पुत्र युवराज कुणाल से प्रेम करती है। वह युवराज से वैसा ही प्रेम का प्रतिदान चाहती है जो युवराज को स्वीकार नहीं, क्योंकि तिष्यरक्षिता उसकी मॉं समान है। इसी प्रतिशोध में तिष्यरक्षिता युवराज की दोनों ऑंखे निकलवा लेती है। इस घटना का वर्णन कई नाटकों एवं कथाओं में मिलता है किन्तु लेखिका ने इसकी सर्वथा नवीन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत एकांकी एक नवीन सत्य को प्रकट करती है। कपिलवस्तु की राजवधू में लेखिका ने सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा की मनःस्थिति का वर्णन किया है। सिद्धार्थ यशोधरा को रात में सोते समय छोड़कर चले जाते हैं। यशोधरा राहुल के साथ रहती है।महल है, सास ,ससुर हैं पर पति के न होने से

कुछ नहीं है। सिद्धार्थ को बोध ज्ञान मिलता है। ज्ञान प्राप्त होने पर वह आते हैं तो यशोधरा राहुल को उन्हें सौंप कर अपने कर्तव्यों से मुक्ति प्राप्त करती है। लेखिका ने यशोधरा की मनःस्थिति को स्पष्ट करने की कोशिश की है। यशोधरा राजभवन में रहते हुए तपस्विनी का जीवन बिताती है। हृदय परिवर्तन में सम्राट अशोक कलिंग विजय के बाद सैनिकों के परिवार जनों के आर्तनाद से विह्वल हो जाते हैं। तथा उनके हृदय में हिंसा के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होते हैं। फलस्वरुप वे बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। लेखिका का उद्देश्य प्रस्तुत एकांकी में यह स्पष्ट करना है कि जो सम्राट हमेशा युद्ध व विजय की ही कामना करते थे,वे युद्ध में आहत सैनिकों की अवस्थाओं , उनकी विधवाओं की चीखों , माँ के क्रंदन तथा पिता के चीत्कार को सुनकर द्रवित हो जाते हैं तथा वे हमेशा के लिए युद्ध से विमुख हो जाते हैं। अन्य एकांकी की भांति सारथि की कथावस्तु भी इतिहास प्रसिद्ध घटना से है। कृष्ण महाभारत में अर्जुन के सारथी हैं। अर्जुन युद्ध स्थल में सभी प्रियजनों को देखकर विचलित हो जाते है, वे चाहते हैं कि युद्ध न करें। कृष्ण उन्हें उपदेश देते हैं तथा कर्म में लीन होने को कहते हैं। कृष्ण के सारथी होने पर हार का सवाल ही नहीं है। मुक्ति एक सामाजिक एकांकी है। साधू के वेश में दो आदमी गॉव–गॉव घूम कर लड़कियों को उठा ले जाते हैं। पुलिस,समाजसेवक मिल कर लड़कियों को उन लोगों के चंगुल से मुक्ति दिलाते हैं। एक और आवाज में लेखिका ने असहाय, विवश बंधक मजदूर के जीवन को कथावस्तु के लिए चुना है। जनजागरण एवं शासन की सहायता से बंधुआ मजदूर प्रथा का अंत दिखाना इस एकांकी का उद्देश्य है। प्रस्तुत एकांकी आकाशवाणी जयपुर से प्रसारित हो चुका है। लेखिका ने गोमती के माध्यम से जन जागरण का प्रयास करवाया है।वह गरीब है पर परिश्रमी एवं साहसी है। अपने बच्चे के भविष्य के लिए शहर आकर काम करती है, जैसे ही उसे ज्ञान होता है कि सरकार ने इस प्रथा का अंत कर दिया है। गॉव जाकर सभी मजदूरों को जागृत कर अपने हक के लिए लड़ने को तत्पर करती है। तथा अपने प्रयत्नों में सफल रहती है। सावित्री रांका अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हैं। उनके कथ्य सामाजिक एवं ऐतिहासिक हैं। वे अपनी कथा में एकसूत्रता बनाकर रखती हैं। कथानक का चुनाव भी वास्तविकता के धरातल पर रह कर करती हैं। उनके सभी एकांकी रुचिकर है।

'मृदुला बिहारी' के नाट्य संग्रह अंधेरे से आगे में पॉच नाटक संग्रहित हैं। ये सभी

नाटक दूरदर्शन से प्रसारित हो चुके हैं। इन नाटकों के केन्द्र में नारी है। नारी की संवेदना, दृष्टि,व्यवहार ,ज्ञान और कर्म के अपने क्षेत्र हैं। नारी की समस्यायें पुरुषों की समस्याओं से कुछ भिन्न हैं। मूल्यों और समाज व्यवस्था के बीच नारी का जीवन, मन,विचार विभिन्न स्तरों पर आहत होते हैं। इन नाटकों की मुख्य पात्र हीरा ,रंजना, जानकी ,माया और अंजना संवेदनशील मानवी हैं। उनका अपना संसार है,अपनी जीवन स्थितियॉं हैं, अपनी दृष्टि है जिनके अलग–अलग आयाम हैं। इन सभी के व्यक्तित्व में बेचैनी है,कुछ करने की,कुछ पाने की, कुछ होने की, कुछ बदलने की बेचैनी। ये जहॉं अपने को देखना चाह रही हैं,वहॉं नही देख पा रही हैं। परिस्थितियों के बीच ये भंवर में फंस जाती हैं। इनकी नियति एक सरल भारतीय नारी की है। इनके सामने आत्म–साक्षात्कार के क्षण आते हैं, पर ये क्षण आसानी से नहीं आते–भय, पीड़ा,असुरक्षा की भावना,अकेलापन आदि अनेक परिस्थितियों से गुजरने के बाद ही ये क्षण आते हैं। भंवर में रंजना दिल्ली की चकाचौंध देख कर नौकरी करना चाहती है क्योंकि पति की कमाई से वह घर चला सकती है पर ऊपरी तड़क –भड़क नहीं हो सकती हैं ऊपरी दिखावे के लिए अपने घर की सुख शान्ति दॉंव पर लगा कर नौकरी करती है। पति बार–बार मना करते हैं पर अपनी जिद पर अड़ी रहती है। पर थोड़े दिनों में उसे यह एहसास होता है कि उसने इस नौकरी के लिए क्या–क्या खोया है। वह अपने स्वर्ग से घर में वापस लौटना चाहती है। पर पति मना करता है। पहले उसकी नौकरी की आवश्यकता नहीं थी, अब वह एक जरुरत बन गयी है। उसका पति कहता है कि इस भंवर में कूदना आसान है,निकलना मुश्किल है। तीसरे रास्ते का राही की अंजना अमित से प्यार करती थी, उसकी शादी अन्यत्र हो जाती है,इसके लिए भी प्रस्ताव आते हैं पर उसे स्वीकार नहीं हैं। अमित की पत्नी की मृत्यु के पश्चात अमित उससे शादी करना चाहता है,किन्तु वह अपने लिए अलग रास्ता चुनती है। वह अमित के बेटे को गोद लेना चाहती है। वकील से बात भी कर ली है। कानूनन वह प्रसून को गोद ले सकती है। अमित के रास्ते में प्रसून ही दूसरी शादी में रुकावट है। प्रसून को मॉं का प्यार चाहिए,पिता की सुरक्षा चाहिए । जो अमित के घर में नहीं मिल सकती । अकेली अंजना उसे सब कुछ दे सकती है। वे पॉंच शब्द की माया एक संवेदनशील नारी है। वह एक मोची की सहायता करती है पर मोची उसके पैसे वापस नहीं करता है तथा मिस्टर कुमार नाम का एक आदमी, जो उसे उसके पति की नई नौकरी को दिलाने में सहायता करेगा ऐसा

कहता है। उसे खाने पर बुलाती है,पर इन्टरव्यू के दिन उसे वह नहीं मिलता। माया को लगता है सभी धोखा कर रहे हैं । वह मोची के घर जाती है। मोची के घर की वास्तविक स्थिति को देख वह द्रवीभूत हो जाती है। क्योंकि मोची की पत्नी का देहावसान हो चुका है।

वह खुद भी बहुत बीमार है। उसके पास दवा व खाने के लिए पैसे भी नहीं हैं। माया मोची के लिए सब प्रबन्ध करती है। मोची ढेरों आर्शीवाद देता है। घर आकर उसे पति से ज्ञात होता है कि पति को वह नौकरी मिल गयी है जिसके लिए वे लोग परेशान थे। माया को लगता है कि मोची की दुआवों का प्रभाव है। मोची ने बार–बार कहा था कि ' आप को मेरी दुआ लग जाय '। देहरी में एक ऐसी नारी की व्यथा है जिसने अपने पति को देखा ही नहीं । शादी के समय वह काफी छोटी थी। बड़ी होते ही वैधव्य जुड़ गया। उसके मनोभावों को लेखिका ने बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। दूसरी शादी के लिए वह दुनिया के डर के कारण तैयार नहीं हो पाती। जबकि उसे भी मालूम है कि जाने वाले से उसे कुछ जुड़ाव था ही नहीं तो उसके लिए पूरा जीवन ऐसे ही निकालने का कोइ अर्थ ही नहीं । देहरी उसके मन के मनोभावों की है जिसे लॉघकर सहर्ष दूसरी शादी को स्वीकार करना है। समाज की परम्परागत बेड़ियों को तोड़ कर चेतन को अपनाना है जो उसे चाहता है तथा शादी करना चाहता है। हमारे समाज में हीरा जैसी अनेक लड़कियां हैं,पर उन्हें चेतन नहीं मिल पाता। इसके लिए हमें अपनी मान्यताओं को बदलना पड़ेगा। अंधेरे से आगे में लेखिका ने जानकी के माध्यम से सभी नारियों का मार्ग प्रशस्त किया है। अगर अपने मन में लगन हो, कठिन परिश्रम करके सभी परेशानियों से निकला जा सकता है। जीवन की परेशानियॉ रूपी अंधेरे से निकलने के बाद बहुत कुछ है,जिन्दगी में। नारी के जीवन में अंधेरा ही सर्वस्व नहीं है,जिसे हमारे क्रूर समाज ने उसे दिया है। जानकी की शादी बचपन में हो चुकी है। गॉव में रहने के कारण वह पढ़ न सकी। उसका पति पढ़ कर एक अच्छी नौकरी पा लेता है, पर जानकी उसे स्वीकार नहीं । ढेरों परेशानियों को पार कर जानकी बी0 ए0 पास कर लेती है। कल्याणी दीदी उसे यथासम्भव सहायता करती हैं। कल्याणी दीदी एक स्कूल की प्रधानाचार्या हैं। उनकी भी जिन्दगी जानकी जैसी ही है। अब जानकी के मन में किसी के लिए कोई शिकायत नहीं है। वह गांव लौट कर सबकी सेवा करती है। लड़कियों को पढ़ाती है।जिसे मदद की आवश्यकता है, करती है। अपना पराया सब भूल चुकी है। उन लोगों की भी सहायता करती है जिन लोगों ने उसके साथ

दुर्व्यवहार किया है। उसका पति जानकी को लेने आता है क्योंकि वह जिस लड़की के लिए जानकी को अस्वीकार कर रहा था,उसकी शादी कहीं हो गयी। कभी स्टेशन पर वह जानकी को अपने भाई के साथ देख लेता है। अब तो जानकी पढ़ी लिखी सुन्दर हर तरह से उसके योग्य है। इसलिए लेने आता है। पर जानकी के पास से वह निराश लौटता है।
उसके पास आत्मविश्वास है,जिसके सहारे उसने अपने भीतर,(अंधेरे से निकलने के बाद) दीया प्रज्वलित किया है उस आलोक में उसे उसका मार्ग साफ–साफ दिखायी देता है। वह अब उस लौ को बुझने नहीं देना चाहती। मृदुला बिहारी के सारे पात्र हमारे बीच के हैं,सामान्य हैं। हर परिस्थितियों से लड़ते जीतते– हारते हैं। मृदुला बिहारी के नाटकों का कथ्य वास्तविक धरातल से है। सभी नाटकों में एकसूत्रता है। उनके नाटक हमारे अन्तःस्थल तक छू सकने में सक्षम हैं। उनके नारी पात्र कही से दया के पात्र नही है। वे समाज से लड़कर अपनी परिस्थितियों के साथ समझौता करते हैं। उन्हें अपने अनुकूल बनाते हैं,पर हारते नहीं । अच्छी–बुरी परिस्थितियॉं आती है,पर साहस के साथ मुकाबला करने में सक्षम हैं। सभी कथ्य दर्शक या पाठक के मानस पटल पर स्थायी छाप छोड़ने में समर्थ हैं।

नारी नाट्य लेखिकाओं के नाटकों के कथ्य का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नारी नाट्य लेखिकाओं के नाटकों के कथ्य भी बहुआयामी है। ये अपने कथानक का चुनाव तथा उस थीम को सम्पूर्ण नाटक का रूप देने में सक्षम हैं।इनके नाटकों के कथ्य कहीं तो सूक्ष्म मनोभाव है, तो कहीं स्थूल कथानक या स्थूल घटना कम और ऐतिहासिक धरातल। इन कथानकों व कथ्यों के चुनाव में इन लेखिकाओं ने अपनी कुशलता ,क्षमता और मौलिकता का परिचय दिया है। इन विभिन्न नाटकों के कथ्यों को देखते हुए यह भली–भॉंति कहा जा सकता है कि नारी नाट्य लेखिकाओं के नाटकों में समाज को सही रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता है। ये अभिनेय भी है। इसलिए समाज का दर्पण भी है। इनके अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि नारी लेखिकाओं ने ढेरों नाटक हिन्दी नाट्य साहित्य को अर्पण किए है। जिनके महत्वपूर्ण प्रदेय से हिन्दी नाट्य साहित्य गौरवान्वित हुआ है। इनके बहुमूल्य प्रदान का हिन्दी नाट्य साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। अगले अध्यायों में हम इन नाटकों के विभिन्न शिल्प पक्षों का अध्ययन करेंगे।